हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा आयोजित, अंतर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस कार्यक्रम की रिपोर्ट

भा॰वा॰अनु॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 22 मई, 2023 को संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस मनाया । अंतर्राष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस हर वर्ष 22 मई को मनाया जाता है । डॉ॰ जोगिंदर सिंह ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र ने 29 दिसम्बर, 1993 को जैव विविधता के मुद्दों की समझ और जागरूकता बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाने का निर्णय लिया । वर्ष 2000 से 22 मई को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस घोषित किया गया । उन्होने आगे बताया कि हर वर्ष इस दिवस को विभिन्न थीम पर मनाया जाता है, इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस “समझौते से कार्रवाई तक: जैव विविधता का वापस निर्माण करें” के थीम पर बनाया जा रहा है । डॉ॰ संदीप शर्मा, निदेशक ने अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा उन्होनें कहा कि हमे केवल बड़े पेड़ों के सरंक्षण पर ही केन्द्रित नहीं करना चाहिए बल्कि झाड़ीनुमा एवं हर्ब पौधे को भी सरंक्षित करना होगा । डॉ॰ जगदीश सिंह, वैज्ञानिक ने हिमालयन क्षेत्र मे जलवायु परिवर्तन के जैव विविधता पर होने वाले प्रभाव के बारे मे कहा कि निचले क्षेत्र की प्रजातियाँ उच्च क्षेत्रों मे शिफ्ट हो रही । जैव विविधता के विभिन्न घटकों में संतुलन बनाए रखना बहुत जरूरी है । उन्होनें कहा कि भारत में लाइफ मिशन कार्यक्रम चल रहा है, जिसका उदेश्य पर्यावरण सरंक्षण है और इसके लिए 75 एक्शन प्लान सुझाए है । देश का हर नागरिक छोटे छोटे कदम उठाकर पर्यावरण सरंक्षण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है । डॉ॰ रणजीत कुमार, वैज्ञानिक एवं मुख्य वक्ता के रूप में इस वर्ष के थीम पर व्याख्यान दिया । उन्होनें जैव-विविधता कन्वेंशन के उद्देश्य के बारे में प्रकाश डाला । डॉ॰ कुमार ने कहा कि इंडियन हिमालयन क्षेत्र जैव विविधता का हॉट स्पॉट है, जो 5.3 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला है तथा यहाँ 21 तरह के वन पाये जाते हैं । उन्होने जैव विविधता का स्तर, मूल्य, पारिस्थिकी तंत्र सेवाएँ, जैवविविधता के ह्रास के कारण, जलवायु परिवर्तन का जैव विविधता पर असर, सतत उपयोग एवं सरंक्षण विशेषकर हिमालयी क्षेत्रों की जैव-विविधता के सरंक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की । उन्होनें बताया कि

हिमालयन क्षेत्र में 18,940 वनस्पति प्रजातियाँ तथा 30,000 से ज्यादा वन्य प्राणी प्रजातियाँ है । पौध प्रजातियों में से उत्तर पश्चिमी तथा पश्चिमी हिमालय में 6745 एंजियोस्पर्म (फूल लगने वाली) प्रजातियाँ है, जो 225 कुल तथा 1768 जेनेरा से संबन्धित है । उन्होने कहा कि जनसंख्या वृद्धि, ग्लोबल वार्मिंग, अत्यधिक चरान एवं अनियंत्रित पर्यटन हिमालयन क्षेत्र की जैव-विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे है । इस अवसर पर वैज्ञानिक, अधिकारी, शोधार्थी और कर्मचारी सहित 70 लोगों उपस्थित थे । इसके अलावा फीड रिसर्च स्टेशन पर कार्यरत कर्मचारी ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम से जुड़े ।

Report on the celebration of "International Biodiversity Day" organized by Himalayan Forest Research Institute, Shimla

ICFRE-HFRI, Shimla celebrated International Bio-diversity Day (IBD) on May 22, 2023 in the Institute under the theme -From Agreement to Action: Build Biodiversity Back. At the outset, Dr. Joginder Singh, CTO welcomed all the participants and highlighted the rationale behind celebration of IBD. Dr. Sandeep Sharma, Director In-charge elaborated on the importance of IBD and emphasized that we should not focus only on the conservation of tree species but should also conserve shrub and herbaceous plants. Dr. Jagdish Singh, Scientist, told that it is very important to maintain balance among the various components of biodiversity. He further said that the LiFE Mission program is going on in the country, for which 75 action plans have been suggested for the protection of the environment. Every citizen of the country can make an important contribution in environmental protection by taking small steps. Dr. Ranjit Kumar, Scientist, delivered a lecture on the theme of this year as the keynote speaker. He explained about the purpose of the Bio-diversity Convention. Dr. Kumar said that the Indian Himalayan region is a hot spot of biodiversity, which is spread over an area of 5.3 lakh square meters and 21 types of forests are found here.

He told that there are 18,940 plant species and more than 30,000 wild animal species in the Himalayan region. Among the plant species, there are 6745 angiosperm (flowering plants) species belonging to 225 families and 1768 genera in the northwestern and western

Himalayas. He also talked about biodiversity levels, value, ecosystem services, causes of biodiversity loss, impact of climate change on biodiversity, sustainable use and conservation, especially the conservation of biodiversity in the Himalayan regions. Seventy people including scientists, officers, researchers and staff were present on the occasion. Apart from this, the employees working at the Feed Research Stations joined the program through online mode.

Glimpses of Programme

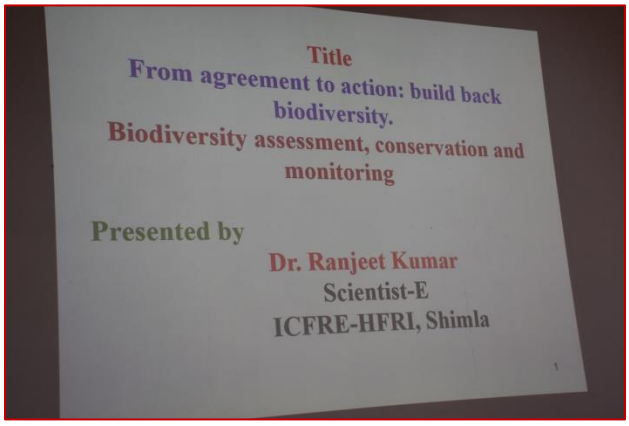

Title
From agreement to action: build back biodiversity.
Biodiversity assessment, conservation and monitoring
Presented by
Dr. Ranjeet Kumar
Scientist-E
ICFRE-HFRI, Shimla

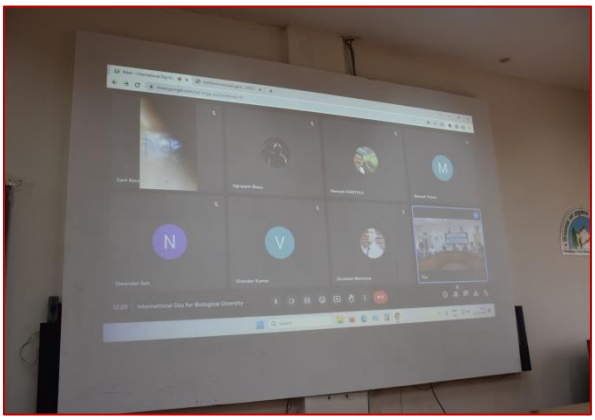

तापमान बढ़ने से बदल रही हिमाचल की जैव विविधता

- ऊपरी क्षेत्रों को शिफ्ट हो रही निचले क्षेत्रों में उगने वाले पौधों की प्रजातियां
- जैव विविधता दिवस पर कार्यक्रम में बोले वैज्ञानिक

स्टाफ रिपोर्टर-शिमला

बढ़ते तापमान के कारण हिमाचल प्रदेश की जैव विविधता भी प्रभावित हो रही है। तापमान बढ़ने से निचले क्षेत्रों में उगने वाली प्रजातियां ऊपरी क्षेत्रों के लिए शिफ्ट हो रही है। खासकर बागबानी फलों की प्रजातियां उपरी इलाकों के लिए शिफ्ट हो रही है। इसका असर सेब की फसल पर भी देखने को मिल रहा है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला जैव विविधता पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया था। इस दौरान वैज्ञानिकों ने इस बात का खुलासा किया है। कार्यक्रम के दौरान मुख्य तकनीकी अधिकारी डा. जगदीश सिंह व डा. जोगिंद्र सिंह ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र ने 29 दिसंबर, 1993 को जैव विविधता के मुद्दों की समझ और जागरूकता बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाने का निर्णय लिया था। वर्ष 2000 से 22 मई को अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस घोषित किया गया। हर वर्ष इस दिवस को विभिन्न थीम पर मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि भारत कि अगवाई में लाइफ मिशन कार्यक्रम चल रहा है जिसका उद्देश्य पर्यावरण के सरंक्षण हेतु 75 एक्शन प्लान सुझाए है। कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिक डा. रणजीत कुमार ने कहा कि इंडियन हिमालयन क्षेत्र जैव विविधता का हॉट स्पॉट है, जो 5.3 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला है। यहां 21 तरह के वन पाए जाते हैं। उन्होंने कहा कि हिमालयन क्षेत्र से निकलने वाली नदियां 1.4 बिलियन मानव जातियों को सपोर्ट करती है। इस अवसर पर वैज्ञानिक, अधिकारी, शोधार्थी और कर्मचारी सहित 70 लोगों उपस्थित थे। इसके अलावा फीड रिसर्च स्टेशन पर कार्यरत कर्मचारी ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम से जुड़े।

हिमालय में 18,940 वनस्पति प्रजातियां

डा. रणजीत कुमार ने कहा कि हिमालयन क्षेत्र में 18,940 वनस्पति प्रजातियां तथा 30,000 से ज्यादा वन्य प्राणी प्रजातियां है। पौध प्रजातियों में से उत्तर पश्चिमी तथा पश्चिमी हिमालय में 6,745 फूल लगने वाली प्रजातियां है, जो 225 कुल तथा 1,768 जेनेरा से संबंधित है।

हर्बल पौधों को दें बढ़ावा

एचएफआरआई शिमला के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने बताया कि जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो रही जैव विविधता को रोकने के लिए हमे केवल बड़े पेड़ों के सरंक्षण पर ही केंद्रित नहीं करना चाहिए बल्कि झाड़ीनुमा हर्बल पौधों को भी संरक्षित करना होगा।